होली के रंग

आई रे आई, आई रे आई, रंगों भरी होली आई।
गली-गली, गाँव-गाँव में, मस्तीभरी टोली छाई।

हरे-गुलाबी, लाल-बसंती, रंगभरी ये पूर्वायी।
सबके चेहरे एक से लगते, समभाव की रीत निभाई।

होली आई, होली आई, रंग-बिरंगी होली आई।
देखो बहना देखो भाई, रंग-बिरंगी होली आई।

त्यौहारों की गरिमा देखो, संग लाती बहारें सुखदाई।
पावन रीत मनाकर के, रंगों की झड़ी हरमन भायी।

नन्ही सी देवी ने देखों, भरी पिचकारी ओर चिल्लाई।
बच सकते हो बचके दिखाओ, अब तो तुम्हारी शामत आई।

होली आई, होली आई, रंग-बिरंगी होली आई।
देखो बहना देखो भाई, रंग-बिरंगी होली आई।
मौनव्रत ढह गए रंगों में, पियासंग खुल के चहचहाई।
टूटे निराशा के बन्धन, मुख पे हल्की सी हंसी ऊभर आई।

स्वछन्द हुए कर सुकोमल के, मस्त रंग होली ले आई।
सास-ससुर व जेठ–जेठानी, भाग रहे हर दर साँई।

होली आई, होली आई, रंग-बिरंगी होली आई।
देखो बहना देखो भाई, रंग-बिरंगी होली आई।

कंप-कंपाते हाथों से दादा ने, जीवटता दिखलायी।
लकुटी फैंक, पौहंचा पकड़कर, रंग दी दादी, शरमायी।

गाँव-गाँव और नगर-नगर में, फैली रंगों की तरूणाई।
बरसाना की होली देखो, कान्हा–राधा की याद आई।

होली आई, होली आई, रंग-बिरंगी होली आई।
देखो बहना देखो भाई, रंग-बिरंगी होली आई।
पुष्पों से वो होली खेले, अद्भुत लीला दिखलाई।
मधुर तान पर देखो सारी, गोपियाँ खींची चली आई।

कर भस्म बुराई, स्वच्छ मन से, खेलो होली, होली आई।
गोबर- कीचड़, कालस तजके, पुष्प-रंगों की बारी आई।
होली आई, होली आई, रंग-की बारी आई।
होली आई, होली आई, रंग-बिरंगी होली आई।

विस्मृत कर वैर-भाव को, अपना बना लो सबको भाई।
अपनी व्यथा से बढ़कर मानो, इस जगत में पीरपराई।

धर्म-कर्म की राह पर देखो, मिलती है नेक कमाई।
बन्धु-भाव से सारे विश्व में, होली नई- सुबह ले आई।

होली आई, होली आई, रंग-बिरंगी होली आई।
देखो बहना देखो भाई, रंग-बिरंगी होली आई।

डॉ उमेश प्रताप वत्स